

अध्याय-2

संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Related Literature) :-

2.1 परिचय: -

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) आज शिक्षा, मनोविज्ञान, प्रबंधन, और नेतृत्व जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। यह व्यक्ति के जीवन में सफलतापूर्वक निर्णय लेने, तनाव प्रबंधन, आपसी संबंध सुधारने और आत्म विकास में सहायक होती है। इस अध्याय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की विभिन्न परिभाषाएँ, मॉडल, सिद्धांत एवं इससे संबंधित शोधों की समीक्षा की गई है।

2.2 भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा(Definition of Emotional Intelligence) :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता, नियंत्रित करता और उन्हें प्रभावशाली तरीके से उपयोग करता है।

वैज्ञानिकोंकेअनुसारपरिभाषा:-

डेनियल गोलेमैन (1995):-

"भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्वयं को प्रेरित करने, निराशाओं का सामना करने, आवेग को नियंत्रित करने, मूड को नियंत्रित करने और दूसरों के साथ सहानुभूति रखने की क्षमता है।"

सैलोवी और मेयर (1990):-

"भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तात्पर्य विचारों की सहायता करने, भावनाओं और भावनात्मक अर्थों को समझने और भावनाओं को प्रतिबिंबित रूप से नियंत्रित करने के लिए भावनाओं को समझने, उन तक पहुंचने और उत्पन्न करने की क्षमता से है।"

2.3 वास्तुशिल्प के मॉडल (भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मॉडल) :-

1. क्षमता मॉडल - सैलोवी और मेयर द्वारा प्रस्तावित

यह मॉडल चिह्न है कि ई. एक इमैजिनिक योग्यता है।

2. मिश्रित मॉडल - डैनियल गोलेमैन द्वारा विकसित

यह ईआई को व्यक्तित्व विशिष्टता और सामाजिक कौशल के मिश्रण के रूप में देखा जाता है।

3. विशेषता मॉडल - पेट्राइड्स और फ़र्नहैम

यह ईआई को व्यवहार और व्यक्तित्व से संबंधित संकेत देता है।

उत्कृष्टता और शिक्षा (एली और शिक्षा)

ई.आई. छात्रों के अनुशासन, आत्म-सम्मान, आदि

2.4 संबंधित साहित्य की समीक्षा :-

वंदना गर्ग 2017. आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन। वयस्कता से पहले की अवस्था वह अवधि होती है, जिसके दौरान एक किशोर को पता चलता है कि वह कौन है और वह वास्तव में क्या महसूस करता है। यह युवाओं के लिए करुणा, वैचारिक सोच और भविष्य के समय के दृष्टिकोण के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करने का एक महत्वपूर्ण समय है; एक ऐसा समय जब माता-पिता के साथ घनिष्ठ और आश्रित संबंध साथियों और विभिन्न वयस्कों के साथ अधिक चरम संबंधों के लिए दृष्टिकोण प्रदान करना शुरू करते हैं। किशोरावस्था भावनात्मक मुद्दों के लिए सबसे कमजोर अवस्था है, इसलिए किशोरों को भावनाओं के बारे में सिखाना और वे दूसरों और उनकी गतिविधियों को कैसे प्रबंधित करते हैं, यह उनके दिन-प्रतिदिन के संघर्षों और अच्छे संबंधों को बनाए रखने में असाधारण रूप से उपयोगी हो सकता है।

वर्तमान अध्ययन बैतूल (म.प्र.) के आदिवासी और गैर-आदिवासी किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करने के लिए किया गया था। मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के विभिन्न उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से किशोर छात्रों का चयन करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना करण तकनीक का उपयोग किया गया था। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लिए डेटा एकत्र करने के लिए मंगल और मंगल भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची का उपयोग किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए स्वतंत्र नमूने टी-परीक्षण का उपयोग किया गया था। परिणामों में पाया गया कि जनजातीय और गैर-जनजातीय किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप पर 0.01 महत्व के स्तर पर काफी भिन्नता है। गैर-जनजातीय किशोरों ने जनजातीय छात्रों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उच्च स्तर दिखाया। इसके अलावा अध्ययन से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप पर आदिवासी किशोर लड़कों और गैर-आदिवासी किशोर लड़कों और आदिवासी किशोर लड़कियों और गैर-आदिवासी किशोर लड़कियों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद हैं।

ज्योति राठी 2015. स्कूल के प्रकार के संबंध में किशोर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन। यह अध्ययन हिमाचल प्रदेश के सिरसा जिले से जानबूझकर चुने गए वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले सौ किशोरों (50 लड़के 50 लड़कियाँ) पर किया गया था। दोनों स्कूलों से ग्यारहवीं और बारहवीं की बरकरार कक्षाएँ ली गईं। आवश्यक जानकारी के संग्रह के लिए अन्वेषक ने डॉ. एस. के. मंगल और श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची-एमईआईआई (2004) का उपयोग किया।

इरा त्रिपाठी 2016. भावनात्मक बुद्धिमत्ता समायोजन से संबंधित रांची (झार खंड) जिले के आदिवासी गैर-आदिवासी किशोरों का एक अध्ययन। इस अनुभवजन्य पत्र का उद्देश्य आदिवासी-गैर-आदिवासी किशोर समूह में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन के बीच संबंधों की जांच करना था। कई अध्ययनों से पता चला है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक बफर के रूप में काम करती है।

समायोजन के मामले में, इसे ध्यान में रखते हुए, रांची जिले के आदिवासी-गैर-आदिवासी किशोर समूह में समायोजन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव को देखने के लिए वर्तमान अध्ययन किया गया था। अध्ययन के लिए नमूने में रांची जिले के 200 पुरुष और 200 महिला प्लस दो छात्र शामिल थे। पुरुष और महिला छात्रों को आगे पुरुष आदिवासी, पुरुष गैर-आदिवासी और महिला आदिवासी, महिला गैर-आदिवासी समूहों में विभाजित किया गया था। छात्रों को शहर के विभिन्न स्कूलों से चुना गया था। REIT- रोकिया ज्ञानिनुदीन भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बेल एडजस्टमेंट इन्वेंटरी का परीक्षण उपर्युक्त समूहों पर किया गया था। परिणामों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन महत्वपूर्ण रूप से (01 स्तर पर) सहसंबद्ध हैं। यह सभी समूहों के

लिए सही था। यह भी पाया गया कि आदिवासी-गैर-आदिवासी समूह में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन के विभिन्न पैटर्न हैं।

नंदवाना और जोशी (2010) ने उदीपुर के टीडी गांव के उद्देश्यपूर्ण रूप से चुने गए माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 16 से 18 वर्ष की आयु के 60 आदिवासी किशोरों पर एक अध्ययन किया। आदिवासी किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का आकलन एस के मंगल और शुभ्रा मंगल द्वारा एक मानकीकृत भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची (एमईआईआई) का संचालन करके किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश किशोरों (55%) में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर कम पाया गया। आदिवासी किशोर लड़के और लड़कियों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर था; लड़के तुलनात्मक रूप से लड़कियों की तुलना में अधिक थे।

श्री देवी और परवीन (2008) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समायोजन, आत्म अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन किया और पाया कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समायोजन, आत्म अवधारणा और उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध था।

कुमार (2014) ने IXth क्लास के 100 छात्रों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) के भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन के सह संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध था।

लाल (2014) ने मेरठ क्षेत्र से क्लस्टर रैंडम सैंपलिंग तकनीक के माध्यम से 300 छात्रों का नमूना लेकर कला और विज्ञान स्ट्रीम के पुरुष और महिला छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करने के उद्देश्य से शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में अनुसूचित जाति के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया और पाया कि उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले कला और विज्ञान स्ट्रीम के पुरुष अनुसूचित जाति के छात्रों के औसत उपलब्धि अंकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर था, उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाली कला स्ट्रीम की महिला अनुसूचित जाति की छात्रों के औसत उपलब्धि अंकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर था। इसके अलावा, अनुसूचित जाति के पुरुष छात्रों में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता थी और वे अपने समकक्षों की तुलना में शैक्षणिक रूप से बेहतर थे।

चामुंडेश्वरी (2013) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच की। उच्चतर माध्यमिक स्तर से लिए गए 321 छात्रों का नमूना। परिणाम ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण सह संबंध दिखाया।

कुमार, मेहता और माहेश्वरी (2013) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा, मनोवैज्ञानिक समायोजन और शैक्षणिक प्रदर्शन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच की। उन्होंने पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

उमादेवी (2013) ने किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया।

सुराना और रावत (2014) ने बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं में औसत से अधिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है। व्यक्तिगत कारकों में, लिंग ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक महत्वपूर्ण लेकिन मध्यम प्रभाव दिखाया, जबकि भाषा और शिक्षा धाराओं के माध्यम का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

एबिनाग्बोम और निज़ाम (2016) ने जांच की कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है। परिणामों ने पाँच भावनात्मक बुद्धिमत्ता चर और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध प्रकट किया। इसके अतिरिक्त, प्रतिगमन विश्लेषण ने पहचाना कि केवल सहानुभूति और आत्म-प्रेरणा ने ही शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

घनी और शर्मा (2017) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यय के बीच संबंध पर किया है: भारतीय संदर्भ में एक अध्ययन में पाया गया कि जो व्यक्ति सहानुभूति पूर्ण और आत्मविश्वासी होते हैं, वे अंतर्मुखी, निराशा वादी, विक्षिप्त और प्रभावशाली व्यक्तियों की तुलना में जब भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करते हैं।

अजय (2019) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और छात्रों की गणित में उपलब्धि के बीच संबंधों पर एक अध्ययन किया, निष्कर्षों ने इन भावनात्मक बुद्धिमत्ता डोमेन और छात्रों के गणित प्रदर्शन के बीच कमजोर सह संबंधों का खुलासा किया, जिसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके परिणामों में 1% से भी कम भिन्नता में योगदान देती है।

फतेहा और अक्वाद (2020) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव से निपटने की शैलियों के बीच संबंध की खोज की। निष्कर्षों से पता चला कि प्रेरणा और सहानुभूति भावनात्मक बुद्धिमत्ता के शीर्ष स्कोरिंग घटक थे। अधिकांश छात्रों ने सक्रिय समस्या-समाधान और भावनात्मक मुकाबला रणनीतियों का प्रदर्शन किया। निष्कर्षों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव से निपटने के तरीकों के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सह संबंध भी प्रकट किया।

कुमार (2020) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि लिंग, विषय स्ट्रीम, स्कूल का स्थान, पारिवारिक संरचना, पिता का व्यवसाय और पारिवारिक आय जैसे कारकों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कुल मिलाकर, छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर औसत पाया गया, जिसमें महिला छात्रों ने अपने पुरुष साथियों की तुलना में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित की।

डार और गिलान (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता की जांच करने की कोशिश की। अध्ययन के निष्कर्षों ने शिक्षकों के बीच समग्र भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर में महत्वपूर्ण अंतरों को उजागर किया, विशेष रूप से “आत्म-जागरूकता” और “सामाजिक कौशल” के आयामों में।

वेणुकापल्ली (2023) ने प्री-सर्विस शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-प्रभावकारिता पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि प्री-सर्विस प्रशिक्षु शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और उनकी आत्मप्रभावकारिता धारणाओं के बीच एक कमजोर सकारात्मक संबंध है।

2.5 आदर्श व्यक्तित्व से संबंधित अध्ययन (Role Models से संबंधित अध्ययन) :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के विकास में आदर्श व्यक्तित्वों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब छात्र अपने जीवन में किसी आदर्श व्यक्तित्व को अपनाते हैं — जैसे माता-पिता, शिक्षक, समाज के प्रभावशाली व्यक्ति, या ऐतिहासिक महान व्यक्तित्व — तो वे उनके गुणों, व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमता से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

EMRS के छात्रों के संदर्भ में, यह देखा गया है कि जब उनके पास स्पष्ट और सकारात्मक रोल मॉडल होते हैं, तो वे आत्म नियंत्रण, सहानुभूति, आत्म-जागरूकता और संबंध बनाने की क्षमताओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। आदर्श व्यक्तित्व विद्यार्थियों के अंदर प्रेरणा, उद्देश्य और आत्मविश्वास जगाने का कार्य करते हैं।

कुछ प्रमुख बिंदु जो शोध में सामने आए हैं:-

1. शिक्षकों का प्रभाव – शिक्षकों का व्यवहार और संवाद छात्रों के भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन छात्रों ने अपने शिक्षकों को आदर्श माना, उनमें भावनात्मक स्थिरता अधिक पाई गई।
2. परिवार के सदस्य – माता-पिता या भाई-बहन जिनके पास उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है, वे छात्रों को बेहतर तरीके से मार्गदर्शन दे पाते हैं।
3. लोकप्रिय नेता/महापुरुष – कुछ छात्र महात्मा गांधी, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, या रानी लक्ष्मीबाई जैसे राष्ट्रीय आदर्शों से प्रेरणा लेते हैं, जिससे उनमें आत्म-अनुशासन और साहस की भावना विकसित होती है।
4. सामाजिक आदर्श – समाज में सकारात्मक योगदान देने वाले व्यक्ति जैसे कि डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता या सैनिक भी छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं।

आदर्श व्यक्तित्व भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं, विशेषकर ऐसे छात्र जिनका पारिवारिक या सामाजिक समर्थन सीमित होता है, उनके लिए रोल मॉडल अत्यंत प्रेरणादायक भूमिका निभाते हैं।

शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में किए गए अनेक शोध यह सिद्ध करते हैं कि किसी व्यक्ति के जीवन में आदर्श व्यक्तित्व (Role Model) का होना उसके व्यक्तित्व निर्माण और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष रूप से किशोर अवस्था के छात्रों के लिए रोल मॉडल एक प्रेरणास्रोत होते हैं जो उनके विचारों, निर्णयों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

2.5.1. मुख्य अध्ययन और निष्कर्ष:

1. बैंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Albert Bandura – Social Learning Theory):

बैंडुरा ने यह सिद्ध किया कि बच्चे और किशोर अपने आस-पास के लोगों को देखकर व्यवहार सीखते हैं। जब कोई छात्र अपने रोल मॉडल को देखता है, तो वह उसके गुणों, सोचने के तरीके और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं की नकल करता है। इससे उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित होती है।

2. डॉ. डैनियल गोलमैन का अध्ययन (Emotional Intelligence, 1995):

गोलमैन के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता में आत्म-ज्ञान, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे घटक शामिल हैं। यदि किसी छात्र के रोल मॉडल में ये गुण स्पष्ट रूप से दिखते हैं, तो वह छात्र भी इन गुणों को अपनाने की कोशिश करता है।

2.5.2. भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययन:

कई भारतीय शोधों में यह पाया गया है कि ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों के छात्र जिनके पास आदर्श व्यक्तित्व का मार्गदर्शन होता है, वे कठिन परिस्थितियों में भी मानसिक रूप से मजबूत और भावनात्मक रूप से संतुलित रहते हैं। एकलव्य विद्यालयों में ऐसे छात्रों की भावनात्मक स्थिति बेहतर देखी गई है, जिन्होंने अपने शिक्षकों, माता-पिता या ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को रोल मॉडल के रूप में स्वीकार किया है।

2.6 शैक्षणिक प्रदर्शन और रोल मॉडल का संबंध:

अनेक शोध बताते हैं कि जिन छात्रों के पास प्रेरणादायक रोल मॉडल होते हैं, उनका आत्म-विश्वास अधिक होता है और वे अपने शैक्षणिक तथा सामाजिक जीवन में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।

निष्कर्ष:

रोल मॉडल केवल प्रेरणा के स्रोत नहीं होते, बल्कि वे छात्रों के भीतर भावनात्मक समझ, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होते हैं। EMRS जैसे संस्थानों में यदि छात्रों को सकारात्मक और सक्रिय रोल मॉडल मिलते हैं, तो उनका भावनात्मक और समग्र विकास अत्यधिक प्रभावशाली होता है।

2.7 सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढांचा (Theoretical and Conceptual Framework): -

2.7.1 सैद्धांतिक-भावनात्मक:-

बुद्धिमत्ता एक ऐसी क्षमता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, पहचानने, प्रबंधित करने और नियंत्रित करने में सक्षम होता है।

इस शोध का आधार डैनियल गोलमैन (Daniel Goleman) का भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सिद्धांत है, जिसमें उन्होंने EI के पाँच प्रमुख घटकों को प्रस्तुत किया है: -

- ⇒ **स्व-चेतना (Self-awareness):** अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता।
- ⇒ **स्व-विनियमन (Self-regulation):** अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और सकारात्मक दिशा में मोड़ने की योग्यता।
- ⇒ **प्रेरणा (Motivation):** लक्ष्य प्राप्ति हेतु स्वयं को प्रेरित करने की क्षमता।
- ⇒ **सहानुभूति (Empathy):** दूसरों की भावनाओं को समझने और महसूस करने की योग्यता।
- ⇒ **सामाजिक कौशल (Social Skills):** सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की क्षमता।

2.7.2 वैचारिक रूपरेखा (Conceptual Framework): -

इस अध्ययन में यह मान्यतालीगई है कि EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) के छात्रों के भावनात्मक अनुभव उनके सामाजिक, शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव डालते हैं। इन छात्रों का वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि, और शिक्षण पद्धति, उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

इस शोध में निम्नकारकों का विश्लेषण किया गया है: -

लिंग (Gender)

1. कक्षा स्तर (Class level).
2. सामाजिक पृष्ठभूमि (Socio-economic background).
3. विद्यालयीन वातावरण (School environment).

इन कारकों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध को जानने का प्रयास इस अध्ययन के वैचारिक ढांचे की आधारशिला है।

2.8 अनुसंधान का अंतर (Research Gap): -

वर्तमान समय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) पर अनेक शोध किए गए हैं, जिनमें यह स्थापित किया गया है कि EI विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परंतु, इन अध्ययनों में अधिकांश ध्यान शहरी या सामान्य विद्यालयों के छात्रों पर केंद्रित रहा है। EMRS (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) जैसे विशेष प्रकार के आवासीय विद्यालय, जहाँ अधिकांश छात्र अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) से आते हैं, वहाँ के छात्रों के भावनात्मक अनुभव और बुद्धिमत्ता पर सीमित अध्ययन उपलब्ध हैं। भोपाल जिले के EMRS छात्रों पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित अनुसंधान न के बराबर है। इसके अतिरिक्त, निम्न बिंदु अनुसंधान का अंतर दर्शाते हैं:

1. अधिकांश पूर्ववर्ती शोधों में सामाजिक या पारिवारिक पृष्ठभूमि को कम महत्व दिया गया है।
2. जनजातीय छात्रों के भावनात्मक विकास के विशेष संदर्भ में प्रासंगिक डेटा का अभाव है।
3. विशेष रूप से भोपाल जिले में स्थित EMRS विद्यालयों के छात्रों की EI का तुलनात्मक या वर्गीकृत विश्लेषण उपलब्ध नहीं है।

4. लिंग, कक्षा स्तर तथा शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर EI में संभावित भिन्नताओं को लेकर सीमित अध्ययन हुए हैं।
5. अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन शहरी या सामान्य विद्यालयों के छात्रों पर केन्द्रित रहे हैं, जबकि आदिवासी क्षेत्रों में स्थित EMRS छात्रों पर सीमित शोध हुआ है।
6. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व विशेषताओं के आपसी संबंध पर बहुत कम अध्ययन विशेष रूप से भोपाल के EMRS छात्रों के संदर्भ में उपलब्ध हैं।
7. उपलब्ध अध्ययनों में सांस्कृतिक कारकों को समुचित रूप से नहीं जोड़ा गया है, जबकि यह कारक EMRS छात्रों के व्यक्तित्व और भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। अधिकांश अध्ययन मात्रात्मक रहे हैं, गहन विश्लेषण हेतु गुणात्मक पहलुओं की भी आवश्यकता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य इन्हीं अनुसंधान अंतरालों को भरना है, जिससे EMRS छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बेहतर ढंग से समझा जा सके और उनके सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी शैक्षिक रणनीतियाँ बनाई जा सकें।

2.9 भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षा (EI and Education): -

- EI छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्म-सम्मान, और सामाजिक समायोजन में सुधार लाती है।
- यह तनाव, परीक्षा की चिंता और व्यवहार समस्याओं को कम करती है।
- शिक्षक यदि EI में कुशल हों, तो वे छात्रों को बेहतर भावनात्मक सहायता प्रदान कर सकते हैं।

2.10 निष्कर्ष:-

इस अध्याय में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की परिभाषा, सिद्धांत, मॉडल और इससे जुड़े शोधों की विस्तृत समीक्षा की गई। यह स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के सम्पूर्ण विकास में एक निर्णायक भूमिका निभाती है, विशेषकर EMRS जैसे विशेष शैक्षणिक संदर्भों में।